आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:15-10-14

अपने बेहद के ज्ञान के आधार से हम बच्चों को निश्चय बुद्धि बनाने वाले ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मैं तुम बच्चों को ८४ के चक्र का नॉलेज देता हूँ. मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ परन्तु प्रैक्टिकल में ८४ जन्मो के चक्र में आता नहीं हूँ. तो इससे समझ जाना चाहिए शिव बाप में सारा ज्ञान हैं.

जब हम आत्माये यह ईश्वरीय ज्ञान पहली बार सुनती है तब हमें अंदर से अहसास होता है कि यह ज्ञान कोई भी देहधारी मनुष्य नहीं दे सकता क्योंकि यह ज्ञान में ऐसी कई बातें है जो बिलकुल ही नई है और कोई भी वेद-शास्त्रों-उपनिषद या धर्मग्रंथों में यह बात है नहीं. बाबा ने हमें जो आत्मा, परमात्मा और सारी बेहद की सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया है, यह ज्ञान सिवाय स्वयं परमात्मा के और कोई नहीं दे सकता. यह ज्ञान तो उन्हें ही हो सकता है जो इस सारी सृष्टि का रचयिता हैं (इसलिए कहा जाता है कि रचयिता को ही रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हो सकता हैं). तो हमने बाप को पहचाना है यह ईश्वरीय ज्ञान के आधार से या कहे हमें बाप में निश्चय हुआ है इस परमातम ज्ञान के आधार से.

आज भी बाबा ने मुरली में इस परमातम ज्ञान की कई ऐसी गुह्य बातें कही है जिसे आप स्वयं विचार-सागर-मंथन कर सोचे की यह ज्ञान सिवाय ज्ञान-सागर बाप के अलावा कोई दे सकता हैं. यह सोचेंगे तो इससे भी हमारा परमात्मा प्रति निश्चय और भी पक्का होता जायेगा. जितना हमारा निश्चय ज्ञान में पक्का होगा उतना ही हमारा पुरुषार्थ भी तीव्र होगा.

ज्ञान-सागर परमात्मा -- बाबा ने कहा, मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ परन्तु प्रैक्टिकल में ८४ जन्मो के चक्र में नहीं आता हूँ. बाबा ही तुम्हें ८४ जन्मो का ज्ञान देकर तुम्हें फिर से स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं. बाबा को ८४ जन्मो का अनुभव प्राप्त नहीं होता, लेकिन तुम्हें ८४ जन्मो का अनुभव प्राप्त होता हैं. बाप को अनुभव नहीं है फिर भी बाप तुम्हें यह बताते है की यह सारा चक्र ८४ जन्मो का हैं. इसलिए बाप को ज्ञान-सागर कहा जाता हैं. बाप के सिवाय अन्य कोई भी आत्मा में यह सृष्टि चक्र ज्ञान होता नहीं हैं.

बिजरूप शिवबाबा -- बाबा ने कहा, मैं तो यह ८४ जन्मो के चक्र में आता नहीं हूँ. फिर मेरे में यह ज्ञान कहा से आया? लौकिक में जब कोई टीचर, स्टुडेन्ट्स को पढ़ाते है तो टीचर भी कहा से पहले पढ़ा हुआ तो है ना. तो यह शिवबाबा कैसे पढ़ा? उनको यह ज्ञान किस ने दिया? बाबा कहते है वह मनुष्य आत्माओं का बिजरूप है तो उन्हें मनुष्य आत्माओं के, कल्पवृक्ष

का ज्ञान हैं. जैसे बड़ का झाड़ होता है तो उसका बिज अंदर में रहता है लेकिन उसमें भी सारे वृक्ष की टाल-टालीयों का ज्ञान हैं. लेकिन वह तो चैतन्य नहीं होता. यह फिर है चैतन्य बिज. उन्हें फिर सारी मनुष्य आत्माओं के कल्पवृक्ष का सारा ज्ञान हैं. वही बता सकता है की कभी यह वृक्ष नया होता है फिर जड़-जड़ी भूत पुराना होकर विनाश होता है और फिर से नया बनता हैं. बिज को ही वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान होता हैं.

ऊंच ते ऊंच भगवान - बाबा कहते हैं ८४ जन्म मैं नहीं लेता हूँ, तुम लेते हो. तो जरूर प्रश्न उठेगा ना - बाबा आपको कैसे मालूम पड़ा. बाबा कहते हैं - बच्चे, अनादि ड्रामा अनुसार मेरे में पहले से यह नॉलेज है, जो तुमको पढ़ाता हूँ इसलिए ही मुझे ऊंच ते ऊंच भगवान कहा जाता है और यह ईश्वरीय पढ़ाई भी ऊंचे ते ऊंच गाई जाती हैं.

सृष्टि चक्र में मुख्य आत्माओं का पार्ट का राज (razz) -

- एक ही आत्मा ब्रह्मा और विष्णु अर्थात नारायण का पार्ट बजाती हैं. आत्मा एक है, शरीर दो हैं.

- एक ही आत्मा सरस्वती और लक्ष्मी दोनों पार्ट बजाती हैं. अभी जो सरस्वती है फिर वही आत्मा सतयुग आदि में लक्ष्मी बनती हैं.

- एक आत्मा ज्यादा से ज्यादा ८४ जन्मो का पार्ट अलग-अलग शरीर में बजाती हैं.

- अभी तुम आत्माये ब्राह्मण बने हो फिर सतयुग में देवता बनेंगे. त्रेतायुग में क्षत्रिय, द्वापर में वैश्य और कलियुग में शूद्र बनते हों.

- सब आत्माये असूल में परमधाम में रहने वाली हैं फिर यहॉ सृष्टि चक्र के ड्रामा में नम्बरवार, ऊपर से पार्ट बजाने आती हैं.

- सतयुग-त्रेता ज्ञान-मार्ग है यानी आत्मा अपने-आप को जानकर पार्ट बजाती हैं. द्वापर-कलियुग भक्तिमार्ग है यानी आत्मा अपने-आप को भूल जाती है और शरीर के भान में रहकर ही पार्ट बजाती हैं.

- सतयुग-त्रेता में कोई शास्त्र आदि होते नहीं. यह सब भक्तिमार्ग में, द्वापर से बनाते हैं.

यह बातें परमात्मा बाप के सिवाय और कोई बता सकता है? यही ज्ञान हमारा निश्चय बाप में अटल बनाता है.

ॐ शांति.